दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-23 **HL-2305**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Ajit Singh Khadde

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): ——

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 05 ; 20/07/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	0	4	6	7	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

हिंदी भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह मूलतः खड़ी बोली की संरचना पर आधारित मानकीकृत भाषा है।

उत्तर भारत मुख्यतः हिंदीभाषाभाषी क्षेत्र है जहाँ हिंदी भाषा का उद्भव एवं आधुनिक भाषा के रूप में विकास भी हुआ है। भारत के उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं बिहार नामक राज्यों तथा चंडीगढ़, दिल्ली नामक संघ शासित प्रदेशों में रहने वाले लोगों की प्राथमिक भाषा हिंदी है।

इस मूल हिंदी प्रदेश के अतिरिक्त पंजाब, जम्मू-कश्मीर, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, दमन एवं दीव तथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दादरा-नगरहवेली इत्यादि राज्यों एवं यू.टी. में रहने वाले लोग हिंदी को द्वितीयक भाषा मानते हैं जहाँ की मातृभाषा अपनी है परंतु ये लोग हिंदी समझते हैं तथा व्यावसायिक, प्रशा., शैक्षणिक आवश्यकता पड़ने पर बोल भी लेते हैं

↳ केरल, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल के लोग भी अपनी आवश्यकता पड़ने पर हिंदी समझ लेते हैं।

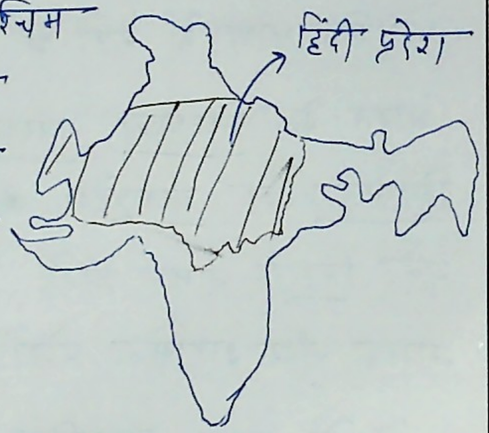

इस दृष्टि से 40% जनसंख्या हिंदी को प्राथमिक एवं 70% जनसंख्या इसे समझने के क्रम में द्वितीयक एवं तृतीयक भाषा मानती है। यह तथ्य हिंदी की महत्वता को स्वयं प्रदर्शित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

सन 1893 को बाबू श्यामसुंदर दास के नेतृत्व में बनारस में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई।

इसकी स्थापना के समय उर्दू एवं अंग्रेजी भाषाओं के व्यापक प्रचार के सामने हिंदी की महत्ता कम दिखाई पड़ रही थी एवं एक आधुनिक परिपक्व भाषा के रूप में हिंदी का उत्थान होना बाकी था।

परवर्ती काल में पंडित मदनमोहन मालवीय, मैथिलीशरण गुप्त एवं राजेंद्र प्रसाद विभूतियाँ इससे जुड़ी एवं अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी के प्रचार का प्रयास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

फिर गया।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने सर्वप्रथम हिंदी का प्रश्न उठाया एवं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को सम्मुख रखा। इन्हीं सम्मिलित परिणामों के कारण हिंदी भाषा का दक्षिण में प्रसार के लिए 'दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचार सभा' 'वर्धा हिंदी प्रचार सभा' जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई।

आजादी पश्चात् भी काशी नागरी प्रचारिणी सभा निरंतर हिंदी भाषा में व्याकरण त्रुटि, ध्वनिगत, शाब्दिक त्रुटियों को दूर कर हिंदी को परिष्कृत भाषा बनाने हेतु निरंतर प्रयासरत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

भारतेंदु युग में खड़ी बोली के ढाँचे पर हिंदी के विकास/मानकीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। इस समय तक हिंदी भाषा के प्रयोग से संबंधित भाषायी द्वैत की समस्या आम खड़ी हुई थी जहाँ गद्य के रूप में खड़ी बोली एवं पद्य के रूप में ब्रज भाषा में रचनाकर्म पर बल दिया जा रहा था।

द्विवेदी युग में आकर भाषायी द्वैत की समाप्ति हुई एवं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के दृढ़ व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं अनुशासनवादी रवैये के फलस्वरूप पद्य एवं गद्य दोनों की भाषा के रूप में हिंदी खड़ी बोली स्थापित हुई। इस समय तक हिंदी में शब्द एवं व्याकरण के स्तर पर व्यापक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवसामान्यताएँ एवं त्रुटियाँ प्रचलित थीं।
जैसे: भातियाँ हुई लड़कियाँ।

यहाँ लिंग के अनुरूप विशेषण में विकार पैदा हो जा रहा था। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नेतृत्व की कमान संभालकर इन सभी रूपों को दोषपूर्ण माना एवं उस्ने, इस्ने, उन्ने, मैंने को जैसे दोषपूर्ण शब्द-प्रयोग की परंपरा को समाप्त किया एवं हिंदी को मानक भाषा बनाने में योगदान दिया। इस क्रम में इनकी सरस्वती पत्रिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी जिसके माध्यम से गुरुजी द्विवेदी जी लेखकों की रचनाओं का मूल्यांकन करते थे।

द्विवेदी जी के ही सानिध्य में अब तक कामता प्रसाद गुरु एवं किशोरदास वाजपेयी ने हिंदी व्याकरण लिखा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा एवं बोली मूलतः प्राणियों (मनुष्य एवं अन्य जीवित प्राणी) के मध्य अपने आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति का एक साधन है।

↳ भाषा एवं बोली के प्रयोग से ही सामाजिक अंतर्क्रियाएँ होती हैं।

भाषा	बोली
⊙ यह किसी बोली के स्तर पर सर्वप्रथम जन्म लेती है	• भाषा की आधारशिला बनती है
⊙ यह आस-पास की बोलियों में ही सर्वाधिक महत्व (राज., सामाजिक, भौगोलिक वजहों से) पाकर भाषा के रूप में स्थापित	⊙ बोली स्थानीय स्तर पर लोगों के दैनंदिन व्यवहार में काम आती है
⊙ प्रशासन, विज्ञान, दर्शन, राजनीति, शैक्षणिक, वाणिज्यिक क्षेत्रों में प्रयुक्त।	⊙ सामान्यतः मौखिक स्तर पर ही।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

⊙ लिखित स्वरूप व्यापक	⊙ सीमित लिखित या सिर्फ मौखिक।
⊙ विभिन्न बोलियों एवं अन्य भाषाओं से शब्द एवं व्याकरण के स्तर पर तत्व ग्रहण।	⊙ यह स्थानीय प्रभावों से मुक्त एवं बाहरी प्रभावों से संरक्षित
⊙ एक लिपि होती है	आवश्यक नहीं है
⊙ व्यापक प्रयोक्ता क्षेत्र।	· सीमित प्रयोक्ता क्षेत्र
⊙ राष्ट्रीय स्तर पर सिनेमा, प्रकाशन की भाषा	· स्थानीय लोक रचनाओं की मौखिक अभिव्यक्ति।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'हरियाणी' बोली

हरियाणी बोली मुख्यतः पश्चिमी हिंदी उपभाषा एवं शौरसेनी अपभ्रंश से संबंध रखती है। हरियाणी खड़ी-बोली हिंदी से निकटता से जुड़ी है।

↳ इसका प्रयोक्ता क्षेत्र आधुनिक हरियाणा प्रांत, दिल्ली NCR, उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान के कुछ क्षेत्र तक विस्तृत है

विशेषताएँ

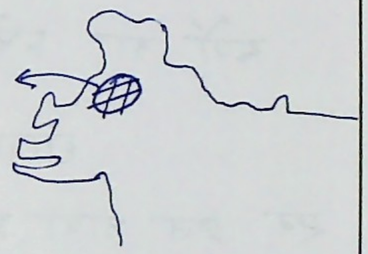

① आकारांत बहुला भाषा।
जैसे: क्या कर रहा?

② 'न' की जगह 'ण' का प्रयोग
जैसे: खाणा (खाना) पाणी (पानी)

③ प्रातिपदिक स्वर या वर्णों के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

लोप की प्रवृत्ति।
जैसे: कट्ठा (खड्ग)

(4) 'ड़' जैसे कठोर शब्दों का प्रयोग
जैसे- कड़, लीलाड़ इत्यादि।

(5) सर्वनाम → वो, वे (प्रथम पुरुष)
तू, तुम (द्वितीय/मध्यम)
मैं, हम (उत्तम पुरुष)

(6) रह्या, चल्या, खेल्या जैसे क्रिया के रूपों का प्रयोग।

हरियाणी बोली पंजाबी, राजस्थानी एवं ब्रज भाषा प्रयोग के क्षेत्रों की सीमाई क्षेत्रों में उनके स्थानीय प्रभाव ग्रहण करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भारत की भाषा-समस्या के संदर्भ में 'त्रिभाषा सूत्र' की अवधारणा पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'त्रिभाषा सूत्र' प्राथमिक / प्रथम तथा 1986 में द्वितीय शिक्षा आयोग द्वारा प्रस्तुत किया गया जहाँ सभी राज्यों में स्कूली स्तर पर →

① उस राज्य की भाषा प्राथमिक भाषा के तौर पर प्रयुक्त हो।

② द्वितीयक भाषा के रूप में आधुनिक भारतीय भाषाओं में से कोई एक भाषा। (गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी)

③ तृतीयक भाषा के रूप में अंतर्राष्ट्रीय अवसरों का दोहन करने के क्रम में अंग्रेजी जैसी किसी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा का प्रयोग।

त्रिभाषा फॉर्मूला के रूप में NEP-2020 द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण एवं आधुनिक समस्याओं को संबोधित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करने के रूप में पहल की गई।

↳ त्रिभाषा फॉर्मूला प्रत्येक छात्र के बहुमुखी एवं सर्वांगीण विकास में योगदान।

↳ हिंदी को संपर्क भाषा एवं राजभाषा के दर्जे से उठाकर अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाया (UN में हिंदी)

↳ इसके तहत अखिल भारतीय स्तर पर उत्तर, दक्षिण एवं उत्तर-पूर्व के शिक्षक कार्यरत होंगे जिससे देश का भावपूर्ण एकीकरण एवं रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

↳ हिंदी को अपनाने से सभी भारतीय साहित्य एवं लेखन की सम्पूर्ण समृद्ध परंपरा का लाभ उठा पायेंगे।

त्रिभाषा फॉर्मूले पर व्यापक दक्षिण भारतीय विरोध के कारण इसे बारंबार टाला जा रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

↳ संविधान के art-351 के तहत केंद्र सरकार का भी यह दायित्व है कि वह हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दे।

↳ 'हिंदी भाषा थोपने' से संबंधित दक्षिण भारतीय विरोध का समाधान सर्वसम्मति बनाकर एवं इंसेंटिव आधारित होना चाहिए।

त्रिभाषा फॉर्मूले के तहत होना यह चाहिए कि सभी केंद्रीय रोजगार संबंधी भर्तियों में हिंदी संबंधी पेपर हो एवं निरंतर हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था भी रहे। अंततः प्रमोशन, वेतन बढ़ोतरी एवं आगे बढ़ने के बेहतर उपायों के तहत हिंदी प्रोत्साहन जारी रखा जाना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अपभ्रंश' की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

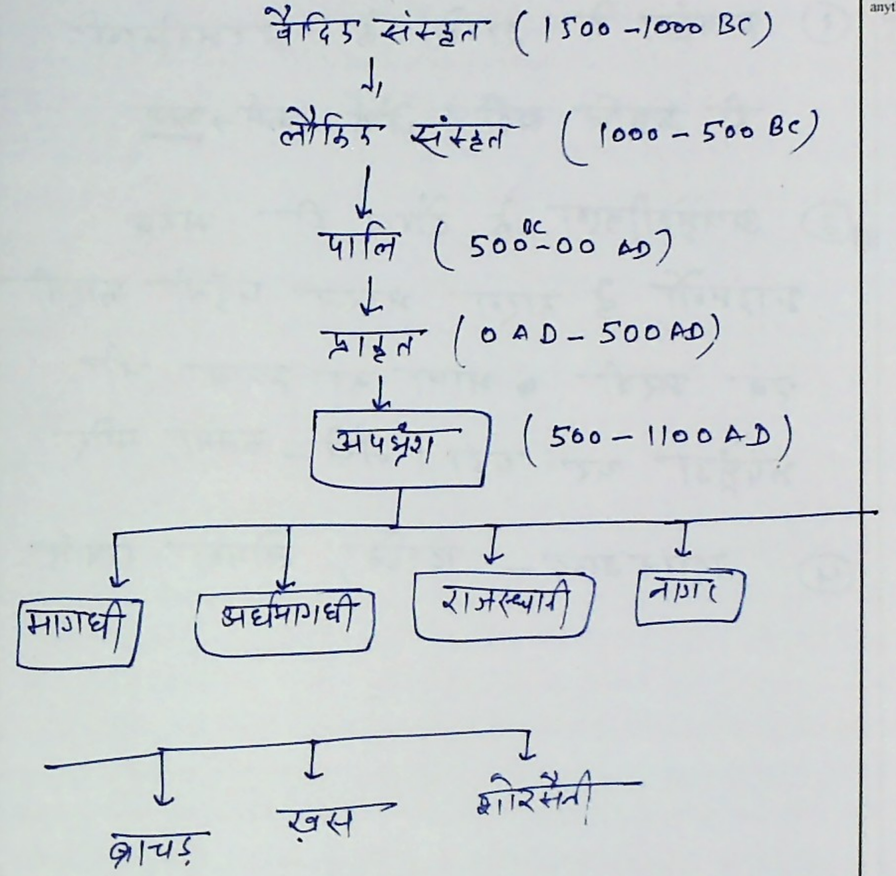

शब्दकोशीय प्रवृत्तियाँ

① अपभ्रंश संस्कृत से पालि, प्राकृत होते हुए भाषा का सरलीकृत रूप है जहाँ भाषा घिसती हुई सरल,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सहज एवं बोधगम्यता के स्तर पर पहुँची।

② अपभ्रंश में शब्दों के तद्भवीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी। जैसे: कर्म → कम्म

③ अपभ्रंशीकरण के दौरान ही अरब आक्रमणों के कारण भारत पहुँची फारसी एवं अरबी भाषा का प्रभाव भी अपभ्रंश पर पड़ा। जैसे – कलमा, अमीर

④ तद्भव शब्द – दिट्ठि, लोयण इत्यादि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी की लिंग व्यवस्था मुख्यतया इसकी जननी भाषा संस्कृत से ली गई है परंतु सरलीकरण एवं तद्भवीकरण की प्रक्रिया में लोक-प्रचलन के आधार पर इसकी विशिष्ट लिंग व्यवस्था का निर्माण हुआ।

↳ हिंदी में संस्कृत के विपरीत केवल 2 ही लिंग (पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग) बचे है। (नागर अपभ्रंश तक 3 थे)

↳ 'लिंग' हिंदी में एक विकारोत्पादक तत्व है जिसमें परिवर्तन पर वाक्य के विशेषण या क्रिया (सहायक) पर विकार उत्पन्न होता है। जैसे:-

- वह जाता है (एकवचन + पुल्लिंग)
- वे जाते हैं। (बहुवचन + पुल्लिंग)
- वह जाती है। (स्त्रीलिंग + एकवचन)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुल्लिंग शब्दों में पहाड़, जल, पौधा, शरीर, स्थान (दिल्ली, चेन्नई इत्यादि) इत्यादि सामान्यतः अकारांत शब्द शामिल है।

↳ स्त्रीलिंग शब्दों के निर्माण में पुल्लिंग शब्दों में निम्न प्रत्यय जोड़ते है →

- यथा → अनी — शेर → शेरनी
  नी → जाट → जाटनी
  ई → लड़का → लड़की
  आ → दुशाल → दुशाला
  इत्यादि।

स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान मुख्यतः अंत में इ, ई, नी, अनी, आनी, इत्यादि प्रत्ययों से की जा सकती है।

↳ हिंदी में उभयलिंग या नपुंसकलिंग के रूप में प्रतीत होने वाले एवं बाहरी विदेशी भाषा से लिये गये

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

शब्दों को सहमति से पुल्लिंग या स्त्रीलिंग में वर्गीकृत कर दिया गया है जैसे-
- दरिया (पुल्लिंग)
- रूह (स्त्रीलिंग)
- टी (स्त्रीलिंग)

अभी भी कुछ शब्दों के लिंग निर्धारण के संबंध में भ्रांति रहती है जैसे- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री इत्यादि। इन्हें लैंगिक रूप से निरपेक्ष मानकर इस समस्या का निवारण किया जा रहा है।

इसी तरह निदेशिका, ~~डि~~ जैसे शब्दों के अल्प-प्रचलन से भी दुविधा बनी रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी का स्वर्णकाल मध्यकालीन रामकाव्यधारा में दिखता है। अवधी भाषा की सम्पन्नता में तुलसी की रामचरितमानस की सबसे बड़ी भूमिका है।

सीमाएँ

① रामभक्तों के द्वारा प्रयोग से अवधी मर्यादित भाषा के रूप में विकसित हुई जो सख्त अनुशासन के साँचे में विकसित हुई। इसमें शृंगार एवं वात्सल्य जैसे भावों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती थी।

② अवधी का तुलसीदास ने संस्कृत के साथ मिश्रण करके प्रयोग किया जिससे यह दुरूह हुई एवं आमजन की समझ से दूर हुई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) साहित्यिक अवधी रचनाओं में प्रयुक्त अवधी में लचीलापन कम रहा, इसी कारण आधुनिक नवजागरण एवं विचारों की अभिव्यक्ति में सुलभ खड़ी बोली काव्य के क्षेत्र में आ पहुँची।

(4) पूर्वार्द्ध मध्यकाल में अवधी में लिखी जा रही सांप्रदायिक रचनाओं ने भी इसे नुकसान पहुँचाया।

(5) ब्रजभाषा के साथ टक्कर ले पाने में असफलता। (तुलसीदास ने स्वयं कवितावली एवं विनयपत्रिका ब्रज में लिखी)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राजभाषा हिंदी और देवनागरी अंक

राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग का आशय है- शासन, कार्यालय की भाषा के रूप में हिंदी का प्रचलन। आजादी पश्चात् हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया एवं अंग्रेजी के साथ-साथ शिक्षा, विधि, व्यापार, कार्यालय जैसे क्षेत्रों में हिंदी का चलन बढ़ा।

राजभाषा हिंदी खड़ी बोली ढाँचे वाली मानक भाषा है।

देवनागरी अंक

1	2	3	4	5	6	7	8	9
१	२	३	४	५	६	७	८	

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~मानक हिंदी की कारक व्यवस्था संस्कृत के ढाँचे से ली गई है। अंतर इतना है कि~~

मानक हिंदी द्वारा संस्कृत का ध्वनि एवं व्याकरण का ढाँचा अपनाते हुए भी हिंदी की कारक व्यवस्था इसका अपना विकास है। संस्कृत की विभक्ति प्रयोग की परंपरा हिंदी में 'परसर्ग' पर आधारित परंपरा से भिन्न है।

मानक हिंदी में 8 कारक हैं जिनमें 6 मुख्य हैं। संबंध कारक एकमात्र कारक है जिसके कारण वाक्य में विकार उत्पन्न होते हैं।

कारक	परसर्ग
(1) कर्ता	'ने' या परसर्गरहित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) कर्म — को
(iii) ~~करण~~ करण — से
(iv) संप्रदान — के लिए
(v) अपादान — से पृथक्
(vi) संबंध — का, के, की, रा, रे, री
(vii) ~~अधि~~ अधिकरण — में, पे, पर
(viii) संबोधन — में ओ हाय अरे!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation